by FRANK
राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 2280
नागायण
हरण काण्ड
तृतीय खण्ड

नागराज के उपलब्ध कॉमिक
♣ नागराज
♣ नागराज की कब्र
♣ नागराज का बदला
♣ नागराज की हांगकांग यात्रा
♣ नागराज और शांगो
♣ खूनी खोज
♣ खूनी यात्रा
♣ नागराज का इंसाफ
♣ खूनी जंग
♣ प्रलयंकारी नागराज
♣ खूनी कबीला
♣ कोबरा घाटी
♣ बच्चों के दुश्मन
♣ प्रलयंकारी मणि
♣ अंकर शंहशाह
♣ नागराज का दुश्मन
♣ इच्छाधारी नागराज
♣ नागराज और कालदूत
♣ नागराज और जादूगर शाकूरा
♣ नागराज और बौना शैतान
♣ नागराज और ताजमहल की चोरी
♣ नागराज और लाल मौत
♣ नागराज और काबुकी का खजाना
♣ नागराज और थोडांगा
♣ नागराज और तूफान-जू
♣ नागराज और जादू का शहंशाह
♣ नागराज और अजगर का तूफान
♣ शकोरा का जादू
♣ पिरामिडों की रानी
♣ नागराज और मिस्टर 420
♣ थोडांगा की मौत
♣ नागराज और बेमबेम बिगेलो
▲ नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव
▲ नागराज और नगीना का जाल
▲ फिर आया नागदंत
▲ नागराज और नगीना
▲ नागराज और बुगाकू
▲ नागराज और मिस किलर
▲ विजेता नागराज
▲ विसर्पी की शादी
▲ शाकूरा का चक्रव्यूह
▲ नागराज का अंत
▲ जहर
▲ नागपाशा
▲ खजाना
▲ क्राइमकिंग
▲ विषकन्या
▲ स्नेक पार्क
▲ इच्छाधारी
▲ केंचुली
▲ जहरीले
▲ बांबी
▲ सपेरा
▲ फन
▲ नागिन
▲ विष-अमृत
▲ सम्मोहन
▲ राज का राज
▲ मृत्युदंड
▲ नागद्वीप
▲ त्रिफना
▲ महायुद्ध
▲ अग्रज
▲ नागराज का कहर
▲ तांडव
▲ आतंक
▲ दुश्मन नागराज
▲ शक्तिहीन नागराज
▲ नहीं बचेगा नागराज
▲ कालचक्र
▲ कुंडली
▲ ऐलान-ए-जंग
▲ काली मौत
▲ नागराज अमेरिका में
▲ आतंकवादी नागराज
▲ विषहीन नागराज
▲ इच्छाधारी चोर
▲ लावा
▲ विनाशलीला
▲ पागल नागराज
▲ मसीहा
▲ सो जा नागराज
∝ शेषनाग
∝ भानूमति का पिटारा
✣ राजनगर की तबाही
✣ प्रलय
✣ विनाश
✣ तानाशाह
✣ सूरमा
✣ कलियुग
✣ कयामत
✣ संग्राम
✣ संहार
∝ नागराज और ड्रैकुला
● रक्षक नागराज
✣ सौडांगी
✣ कोहराम
✣ जलजला
✣ विध्वंस
✣ परकाले
✣ ड्रैकुला का अंत
✣ कोलाहल
✣ खलनायक
✣ सम्राट
✣ सर्व शक्तिमान
✣ चक्र
✣ मैडूसा
✣ छोटा नागराज
✣ नागाधीश
✣ वर्तमान
✣ फ्लेमिना
✣ फुंकार
✣ वरण काण्ड
✣ ग्रहण काण्ड
सुपर कमाण्डो ध्रुव के उपलब्ध कॉमिक
♣ प्रतिशोध की ज्वाला
♣ रोमन हत्यारा
♣ आदमखोरों का स्वर्ग
♣ स्वर्ग की तबाही
♣ मौत का ओलम्पिक
♣ समुद्र का शैतान
♣ बर्फ की चिता
♣ रूहों का शिकंजा
♣ लहू के प्यासे
♣ महामानव
♣ वूडू
♣ मुझे मौत चाहिए
♣ बहरी मौत
♣ उड़नतश्तरी के बंधक
♣ एक दिन की मौत
♣ विनाश के वृक्ष
♣ चैम्पियन किलर
♣ आखिरी दांव
♣ वीडियो विलेन
♣ पागल कातिलों की टोली
♣ ब्लैक कैट
♣ रोबो का प्रतिशोध
♣ दलदल
♣ उड़ती मौत
♣ चण्डकाल की वापसी
▲ ग्रेण्ड मास्टर रोबो
▲ आवाज की तबाही
▲ खूनी खिलौने
▲ किरीगी का कहर
▲ चुम्बा का चक्रव्यूह
▲ डॉक्टर वायरस
▲ सामरी की ज्वाला
▲ आत्मा के चोर
▲ वैम्पायर
▲ सुप्रीमा
▲ मैंने मारा ध्रुव को
▲ हत्यारा कौन
▲ सर्कस
▲ हत्यारी राशियां
▲ मौत के चेहरे
▲ कमांडर नताशा
▲ सजाए मौत
▲ अंधी मौत
▲ षड्यंत्र
▲ महाकाल
▲ खूनी खानदान
▲ अतीत
▲ जिग्सा
▲ ध्रुव-शक्ति
▲ जंग
▲ दुश्मन
▲ क्विज मास्टर
▲ ममी का कहर
▲ कमांडो फोर्स
▲ बौना वामन
▲ कालध्वनि
▲ शह और मात
▲ आया चुम्बा
▲ चुम्बा सम्राट
▲ ध्रुव हत्यारा है
▲ शहंशाह
▲ शैतान
▲ ध्रुव खत्म
▲ अंत
▲ दूसरा ध्रुव
▲ डिजिटल
▲ मास्टर ब्लास्टर
▲ रोबॉट
▲ सुपर कमांडो ध्रुव
▲ सुपर हीरो
▲ फरिश्ता
▲ रॉबिन हुड
▲ चैलेंज
▲ मैं समय हूं
▲ भूचाल
∝ मैं च
∝ गुप्त
✣ सर्वनाश
● ड्रैकुला का हमला
● निशाचर
∝ स्पाइडर
♣ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य:15/-
▲ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य:20/-
● इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य:25/-
∝ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य:30/-
✣ इस निशान वाली कॉमिक का मूल्य:40/
इसी सैट के कॉमिक
✣ हरण काण्ड (नागराज एवं ध्रुव का मल्टी स्टार विशेषांक) (मूल्य : 40/-)
∝ वेबसाइट (ध्रुव का विशेषांक) (मूल्य : 30/-)
∝ कोबी प्रेम (भेड़िया का विशेषांक) (मूल्य : 30/-)
▲ कुंभ का मेला (बांके का विशेषांक) (मूल्य : 20/-)
▲ एम.एम.एस दादा (थ्रिल हॉरर का विशेषांक) (मूल्य : 20/-)
प्रकाशक:राज कामिक्स(राजा पॉकेट बुक्स की एक इकाई) 330/1 बुराड़ी, दिल्ली 110084 फोन: 27611410 email: bizdev@rajcomics.com
आप 100/- रुपए मूल्य या इससे अधिक मूल्य की कॉमिकें डाक द्वारा अग्रिम भुगतान भेजकर मंगा सकते हैं। अग्रिम भुगतान निम्नलिखित दो तरीकों से भेजा जा सकता है।
1. निकटवर्ती पोस्ट ऑफिस से अपने आदेशित कॉमिकों के मूल्य का मनीआर्डर राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84 के नाम बनवाकर, मनीआर्डर फार्म के संदेश वाले स्थान पर आदेशित पुस्तकों के नाम व अपना पता साफ-साफ लिखकर भेजें।
2. किसी भी बैंक से राजा पॉकेट बुक्स के नाम Payable at Delhi का ड्राफ्ट बनवाकर पत्र के साथ भेजें, जिसमें आपकी आदेशित पुस्तकों के नाम व आपका पता साफ-साफ लिखा होना आवश्यक है।
आगामी सैट के कॉमिक
∝ हरी मौत (नागराज का विशेषांक) (मूल्य : 30/-)
∝ गुरु भोकाल (भेड़िया एवं भोकाल का विशेषांक) (मूल्य : 30/-)
∝ निकल पड़ा डोगा (डोगा का विशेषांक) (मूल्य : 30/-)
▲ गांधी गिरी (फाइटर टोड्स का विशेषांक) (मूल्य : 20/-)
▲ हां बोल (थ्रिल हॉरर का विशेषांक) (मूल्य : 20/-)
दिल्ली में वितरक :नागराज नावल्टीज, 112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां, दिल्ली-110006. फोन: 23251109, 23251092, 65172310, 32500860
नागायण
तृतीय खण्ड
हरण काण्ड
1

वरण काण्ड व ग्रहण काण्ड संक्षेप में

अब तक आपने पढ़ा-

सन् 2023 प्रलया धूमकेतू पृथ्वी से टकराने वाला था। उसके विध्वंस से बचने के लिए पृथ्वीवासियों ने अण्डरग्राउण्ड सिटीज़ में रहना शुरू कर दिया। प्रलया पृथ्वी से टकराया वहां जहां गुरुदेव नागपाशा पर एक प्रयोग कर रहे थे। प्रलया की प्रलंयकारी ब्लैक पॉवर्स ने नागपाशा पर अपना कब्जा कर लिया साथ ही नागपाशा को तीन रूपों में विभाजित कर दिया। एक बना महाशक्तिशाली क्रूरपाशा। दूसरा रूप बना महाआलसी सुप्तपाशा। तीसरा रुप बना डरपोक व कायर भीरुपाशा। सन् 2025 ब्लैक पॉवर्स की शक्तियों के साथ क्रूरपाशा विश्व को अपना गुलाम बनाना चाहता है! लेकिन उसके सामने अखण्ड पर्वत के समान खड़े हैं नागराज और सुपर कमाण्डो ध्रुव। इस युद्ध में उनके साथ हैं गुरु गोरखनाथ। गुरु गोरखनाथ इस महाभयंकर युद्ध की भीषणता को भली-भांति जानते थे। वे उन्हें साथ लेकर पहुंचे आयुधक्षेत्र में जहां गुरु द्रोण ने उन्हें दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये व उनके परिचालन में प्रशिक्षित किया। दोनों महायोद्धा किसी भी युद्ध के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो गए। किन्तु इसी बीच क्रूरपाशा के पास पहुंची नगीना। उसने क्रूरपाशा को बताया कि अगर उसे युद्ध जीतना है तो इस समय की निर्णायक शक्ति नागशक्ति को उसे हासिल करना होगा। नाग शक्तियां जो कि सन् 2025 में इच्छाधारी नागों के रूप में अब मानव बनकर

मानवों के बीच भी रह रही हैं और ब्लैक पॉवर्स के विरुद्ध मानवों की मदद कर रही हैं। नागशक्ति को हासिल करने का एकमात्र रास्ता है नागकुमारी विसर्पी से विवाह।

इधर नागद्वीप में होने जा रहा था विसर्पी का स्वयंवर। इस महाआयोजन में जा पहुंचा क्रूर पाशा और साथ ही नागराज व सुपर कमाण्डो ध्रुव। बड़े-बड़े बलशाली स्वयंवर में हार बैठे यहां तक कि क्रूरपाशा भी धूल चाट बैठा। तब नागराज बना स्वयंवर का विजेता और विसर्पी का पति।

अब नागराज, ध्रुव व विसर्पी नागद्वीप से महानगर की तरफ प्रस्थान करते हैं। उन्हें महाग्रहण से पहले महानगर में प्रवेश करना है। किन्तु नगीना, गुरुदेव व क्रूरपाशा उन्हें महानगर ना पहुंचने देने के लिए कृत संकल्प है। वे उन्हें महाग्रहण में ही रोकने के लिए कई बाधाऐं खड़ी करते हैं। किन्तु दोनों वीर योद्धा हर बाधा का मुंह तोड़ जवाब देते हुए अंततः महानगर तक पहुंच ही जाते हैं किन्तु उनका महानगर में प्रवेश होता है महाग्रहण की अवधि के ही दौरान। जिसके कारण नवविवाहित जोड़े पर लग गया है अशुभ घडी का अभिशाप।

इसी के साथ दादा वेदाचार्य भी नागराज से खफा हैं क्योंकि नागराज पहले ही कर चुका है उनकी पोती भारती से शादी। किन्तु भारती को नागराज विसर्पी के विवाह से कोई आपत्ति नहीं होती। वह दोनों का महानगर में स्वागत करती है। किन्तु वेदाचार्य अपनी पोती के लिए बहुत दुखी हैं।

दुखी ध्रुव भी है क्योंकि उसकी पत्नी नताशा उससे अलग होकर अपने पिता ग्रैंडमास्टर रोबो के साथ रहना चाहती है। वो कोर्ट से अपने बेटे रिशी की कस्टडी का केस लड़ती है जिसे नगीना वकील गीना के रूप में जितवा देती है और नताशा ध्रुव को छोड़ जाती है।

अब नगीना गीना के रूप में फिर निकल पड़ी है विसर्पी और नागराज को अलग करने के लिए। **आगे क्या होता है पढ़ें–**

हरण काण्ड

जब जब पाप धरा पर आई। कथा जाई पुनि पुनि दोहराई।।

संजय गुप्ता की पेशकश
राज कॉमिक्स है मेरा जनून
अध्याय
संबंध विच्छेद
5
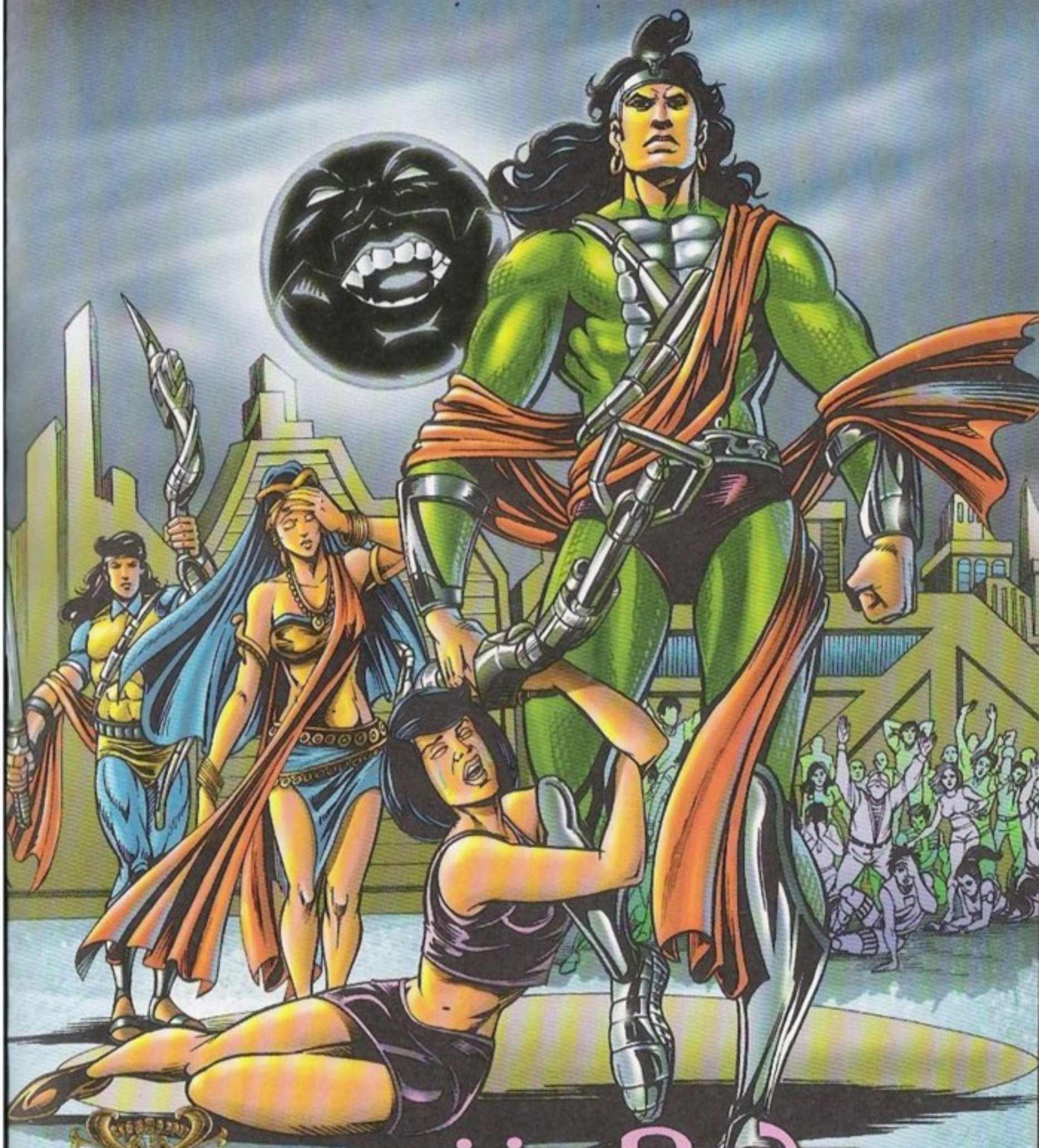
कथा:अनुपम सिन्हा, जॉली सिन्हा
चित्र:अनुपम सिन्हा - पेंसिल फिनिशिंग :अभिषेक मलसूनी, सुधांशु पाण्डेय
इंकिंग:विनोद कुमार - सुलेख एवं रंग:सुनील पाण्डेय - इफेक्ट्स:नगेन्द्र, शशांक, साहिल, विश्वजया
मुझे ये जजमेंट सुनाते हुए अफसोस तो हो रहा है, पर कानून से ऊपर कोई भी नहीं है!
नागराज भी नहीं!
तुम पर एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह करने का आरोप सिद्ध हो चुका है, नागराज! और इस सामाजिक अपराध की हमारे कानून में एक ही सजा है!
नगर-निकाला! और जब तक तुम दोनों पत्नियों में से किसी एक से संबंध-विच्छेद नहीं कर लेते...
... तब तक पूरे विश्व में लागू कानून प्रणाली 'एक विश्व एक कानून' के अनुसार तुम किसी भी नगर में नहीं रह सकते!
और जब तक विसर्पी तुम्हारी दूसरी पत्नी का दर्जा नहीं छोड़ देती, तब तक वह भी किसी नगर में प्रवेश नहीं पा सकती! न महानगर में और न कहीं और! केस डिसमिस!

कमाल कर दिया आपने मिसगीना! पहले ध्रुव और अब नागराज! आपने दो-दो सुपर शक्तियों को खूब सबक सिखाया है!
पर आपने ये केस किसके कहने पर लड़ा है! किसने नागराज के खिलाफ ये मुकदमा दायर किया था?
क्योंकि पूरे महानगर का एक-एक बच्चा तक इस विवाह से खुश था! फिर वह शख्स कौन है जिसको इस विवाह पर एतराज था!
कोर्ट ने और मैंने इस जानकारी को गुप्त रखने का फैसला किया है! ताकि नागराज को सजा मिलने से भड़की हुई जनता अपना गुस्सा उस शख्स पर न निकाल बैठे!
ये... ये क्या हो गया? अभी-अभी तो नागराज, विसर्पी के साथ विवाह करके महानगर में आया था!
"पूर्ण सूर्य ग्रहण का प्रभाव समाप्त हो रहा था! आकाश अभी भी काला था!"
"पर महानगर खुशी से झूम रहा था-"
"ऐसा स्वागत पहले किसी नवविवाहित जोड़े का न तो कभी हुआ था, और न ही शायद कभी होगा-"
"मुझे पलभर के लिए भी यह एहसास नहीं हुआ कि विसर्पी मेरी सौत है या मेरा पति नागराज मुझसे दूर हो गया है-"

"और यही एहसास मैं विसर्पी को देना चाहती थी कि मैं उसकी 'सौत' नहीं हूं, उसकी दोस्त हूं!"
आओ न दीदी!
वैसे तुम्हारे ही घर में तुमसे ये कहते हुए मुझे अजीब सा लग रहा है!
भारती, तुम!
कुछ मत बोलो दीदी! जस्ट एंज्वाय!
आज तुम्हारी शादी की पहली रात है!
बेस्ट ऑफ लक!
"मैंने उस रात कुछ आवाजें सुनी तो थीं-"
नहीं नागराज! ये रिश्ता कायम करके मैं अपनी ही नजरों में अपराधी सा महसूस कर रही हूं!
पर क्यों? जब भारती ने भी तुमको इतनी सहजता से स्वीकार कर लिया है तो...
इसीलिए ही नागराज! इसीलिए!
अगर वह मुझसे लड़ती, झगड़ती, मुझे गालियां तक देती तो शायद मैं सह लेती! पर उसका ये प्यार मुझसे सहन नहीं हो रहा है!
मैंने बड़ी मुश्किल से अपने आपको तुम्हारी दूसरी पत्नी बनने के लिए राजी किया था, पर भारती का हर प्यार भरा शब्द मुझको अपनी ही नजरों में गिरा दे रहा है!
मुझको सोचने के लिए समय चाहिए नागराज!
तब तक हम एक-दूसरे से दूर ही रहेंगे!
जैसा तुम चाहो विसर्पी!
"मैंने सोचा था कि धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा-"

पर नौबत नगर निकाले तक आ जाएगी, ये तो मैंने सोचा ही नहीं था!
मीलॉर्ड! मैं कुछ कहना चाहती हूं!
इस केस के बारे में!
केस डिसमिस हो चुका है, मिस भारती!
मैं केस को फिर से खोलने की अपील करती हूं!
और इस अपील के साथ-साथ मैं नागराज को...
... तलाक दे रही हूं!
फिर न तो नागराज की दो पत्नियां होंगी और न ही नागराज को नगर से बाहर जाना होगा!
हूम! अगर ऐसा हो जाए तो नागराज को मामूली सा आर्थिक दंड देकर छोड़ा जा सकता है। पर इस तलाक में नागराज की भी सहमति चाहिए!
ये लो नागराज! फटाफट हमारे तलाकनामे पर साइन कर दो!
नहीं, भारती! जिस कारण से तुम मुझे तलाक दे रही हो, वह मुझे स्वीकार नहीं है!
मैं तुमको तुम्हारी खुशी के लिए तलाक तो दे सकता हूं, पर अपने स्वार्थ के लिए नहीं!
तो फिर तुमको विसर्पी से संबंध-विच्छेद करना होगा, नागराज!

अगर विसर्पी का विवाह क्रूरपाशा से हो जाता तो क्या नागजाति ब्लैक पॉवर्स का साथ देती?
ये विवाह सिर्फ तुम्हारी और विसर्पी की खुशी के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के कल्याण के लिए हुआ है, नागराज!
ये संबंध बना रहे, ये अति आवश्यक है!
हां! क्योंकि अपने संबंधियों की रक्षा करना नागजाति का कर्तव्य है!
मैं विसर्पी को भी नहीं छोड़ सकता, मीलॉर्ड!
तब तो तुमको किसी निर्णय पर पहुंचने तक इस विश्व के हर नगर से बाहर ही रहना होगा, नागराज!
और यही फैसला विसर्पी पर भी लागू होगा! नाऊ नो अपील्स! केस इज फाइनली डिस्मिस्ड!
ओह! पलभर के लिए तो मैं डर ही गई थी कि कहीं मेरे किए कराए पर पानी न फिर जाए!
लेकिन ऐसा नहीं हुआ!

"वैसे जिस तरह से महानगर पहुंचने पर मुझे प्रतिक्रियाएं मिली थीं, उसको देखकर लगता नहीं था कि मैं नागराज को महानगर से बाहर भेजने में कामयाब हो पाऊंगी-"
नागराज सिर्फ एक ही चीज से हार सकता है! कानून से!
और एक पत्नी भारती के रहते दूसरी पत्नी विसर्पी को लाकर नागराज ने कानून तो तोड़ा ही है!
पर उसको कानून तभी सजा देगा जब उसके इस अपराध के खिलाफ कोई ऐसा शख्स कोर्ट में केस दायर करे जो नागराज की इस हरकत से प्रभावित हो रहा हो!
और मुझे पता है कि इस घटना का सबसे ज्यादा असर किस पर पड़ेगा!
मे आई कम इन, मिसेज नागराज?
आई एम सॉरी! शायद मुझे आपको 'मिस भारती' कहना चाहिए!
आइए! वैसे आप जो भी बुलाएं, ये दोनों नाम मेरे ही हैं, मीना जी!
कहिए, आपने मुझसे मिलने के लिए एप्वायंटमेंट लेने की तकलीफ क्यों उठाई?
मैंने मिसेज ध्रुव यानी नताशा का जो केस जीता था, उसके बारे में तो आपने सुना ही होगा! आपके न्यूज चैनेल पर भी कवरेज आई थी!
जी हां!
आप इंटरव्यू देना चाहती हैं?
पब्लिसिटी?
जी नहीं! मैं छुटकारा दिलाना चाहती हूं! आपको!
किससे?
आपकी सौत विसर्पी से! आपको बस नागराज पर एक केस कराना पड़ेगा! दूसरी अवैध शादी का!
अच्छा आइडिया है! पर मैं चाहती हूं कि केस नागराज पर नहीं मुझ पर चलाया जाए!
आप पर? लेकिन किस जुर्म में?

आपको थप्पड़ मारने के जुर्म में!
अब अगर आप चाहें तो मुझ पर मान हानि का दावा कर सकती हैं!
नाऊ! यू मे गो!
और इस बिल्डिंग से निकलने तक नागराज के खिलाफ एक भी शब्द नहीं बोलना!
तू... तूने नगीना को थप्पड़ मारा! मैं चाहूं तो अभी तेरी कुर्सी पर तू नहीं तेरी राख का ढेर बैठा होगा!
पर मेरा ये मकसद नहीं है! शांत रह, नगीना! शांत रह!
अभी एक मोहरा बचा है!
"समय ने शायद बुड्ढे की इंद्रियों को कमजोर कर दिया था वर्ना वह मेरे असली रूप को जरूर पहचान जाता-"
मेरी पोती की खुशी ही मेरे जीवन का मकसद है, गीना!
और मेरी पोती की खुशी इसी में है कि विसर्पी और नागराज एक साथ रहें!
वैसे भी, नागराज में मेरे राजा तक्षकराज का अंश है! मैं नागराज के खिलाफ कभी जा नहीं सकता!
"मेरी दाल गलने का नाम ही नहीं ले रही थी! आखिरी रास्ता भी बंद हो चुका था-"
"मैं सड़क पर आ गई थी! पर तभी किस्मत ने एक नया द्वार खोल दिया-"
सुनो! पर मुड़ना मत!
नागराज या विसर्पी पर केस करने से क्या होगा?
या तो नागराज को विसर्पी को छोड़ना होगा या दोनों को महानगर छोड़ना होगा!

तुमको यकीन है कि ये काम तुम कर पाओगी?
यकीन को भी अपने ऊपर गीना से कम यकीन होगा!
क्योंकि अगले दिन मुझे वे दस्तावेज मिल जाने वाले थे जिनमें उस शख्स का नाम मौजूद था जिसने इस विवाह के खिलाफ आवाज उठाई थी!
और वह नाम पढ़कर मैं इतना चौंक गई कि कई पलों तक तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ!
FAMILY COURT
ठीक है! जरूरी दस्तावेज तुम्हारे पास भेज दिए जाएंगे!
अपना पता बताओ!
" मुझे इस रहस्यमय शख्स की पहचान जानने की कोई जल्दी नहीं थी- "
लेकिन अब क्रूरपाशा के लिए विसर्पी को हासिल करने का काम काफी आसान हो गया है!
अब ये खबर मुझे क्रूरपाशा तक जल्दी से जल्दी पहुंचानी है, ताकि वह नागराज के वनवास से पहले अपना जाल पूरी तरह से बिछा ले!
वह जाल जिसमें उसे विसर्पी को फंसाना है!
नगीना ने एक दूसरे घर को भी उजाड़ दिया था-

द्वितीय अध्याय
बरसी
पर जिसका घर उसने पहले उजाड़ा था, उसको अभी तक यह पता ही नहीं था कि उसका आशियाना उजड़ चुका है-
नताशा! ऋषि! कहां हो तुम लोग?
घर में अंधेरा क्यों है?
ओह! तुम यहां बैठी हो, नताशा!
पर तुमने अंधेरा क्यों कर रखा है?
शायद तुम्हारा गुस्सा अभी ठंडा नहीं...
...रिचा! तुम यहां क्या कर रही हो?
और वह भी ब्लैक कैट के रूप में!
तुम्हारा इंतजार! यह बताने के लिए कि अब यहां पर तुम्हारा इंतजार कोई नहीं कर रहा है!
तो क्या...?
नताशा ने केस जीत लिया है! उसको फैमिली कोर्ट ने ऋषि की कस्टडी दे दी है! और जानते हो उसको ये केस जिताने वाली वकील कौन थी?
कौन?
नगीना!
व्हाट?
इच्छाधारी नागिन नगीना?
वही! पर वह वकील के रूप में थी! और उसका नाम गीना था!
तुमको पूरा यकीन है?

मैंने अपनी आंखों से उसको रूप बदलते देखा है!
तब तो मामला जरूरत से ज्यादा उलझा हुआ है! भला नगीना को मेरे घरेलू मामले से क्या फायदा हो सकता है? कहींऽऽऽ रोबो और नगीना मिल तो नहीं गए हैं?
पर नताशा को मुझसे दूर करने में नगीना को भला क्या फायदा हो सकता है?
ये तो सिर्फ नगीना ही बता सकती है!
और वह मिलेगी कहां पर?
यह भी सिर्फ नगीना ही बता सकती है!
यह संभव नहीं लगता!
रोबो ने आज तक कोई भी लड़ाई जीतने के लिए किसी का सहारा नहीं लिया है!
यह उसके आत्मसम्मान के खिलाफ है!
इस षड्यंत्र का हम बाद में भी पता लगा सकते हैं! हमारा पहला काम ऋषि को वापस लाना होना चाहिए!
ऋषि आएगा तो नताशा अपने आप आ जाएगी! और दुश्मनों को इस चाल से जो फायदा पहुंचना है वह नहीं पहुंचेगा!
पर मैं ऐसा नहीं कर सकता!
ये कोर्ट और कानून की अवमानना होगी!
ध्रुव कानून कभी नहीं तोड़ता!
और ब्लैक कैट कानून को कभी नहीं मानती!
मैं लाऊंगी ऋषि को!
नहीं रिचा! झगड़ा नहीं! इससे ऋषि की जान खतरे में पड़ सकती है!
और ये न तुम चाहोगी और न मैं!
अरे! मम्मी-पापा आए हैं!
लगता है उनको पता चल गया कि मैं आ गया हूं!
VISITOR
तुम अभी तक तैयार नहीं हुए, ध्रुव? पंडित जी आते ही होंगे!
पर क्यों, पापा?
भूल गए क्या?

आज श्वेता की पहली बरसी है!
कोशिश तो करता हूं पापा! पर भूल नहीं पाता!
मैं अभी नहाकर आता हूं!
काश! इस वक्त ऋषि और नताशा भी यहां पर होते तो श्वेता की आत्मा को और शांति मिलती!
नताशा, गोद में उठाकर लाने के लिए ज़रा ज्यादा बड़ी हो गई है!
पर ऋषि आ गया है!
पापा!
मेरा बच्चा!

पर इसे तुम यहां पर कैसे ले आई...
...चंडिका!
ये तो नताशा के पास था! रोबो के अभेद्य इलाके के अंदर!
ये सवाल अगर मुझसे कोई ऐसा शख्स पूछता जो मुझे नहीं जानता तो मुझे समझ में आ जाता!
लेकिन मुझे दसियों सालों से जानने वाला ध्रुव ये सवाल पूछे तो मुझे समझ नहीं आता।
नताशा न सही, चंडिका तो है न! अब चलो! मुझे ऋषि को जल्दी वापस भी पहुंचाना है!
ऋषि! ऋषि आ गया!
पर मुझे समझ में आ गया है कि चंडिका की खूबियों पर सवाल उठाने वाला ये सवाल मुझे नहीं पूछना चाहिए था!
चलो! अच्छा हुआ कि तुम भी यहां पर आ गई! श्वेता की बेस्ट फ्रेंड के बगैर ये पूजा अधूरी रह जाती!
पर नताशा का न आना मुझे कांटे की तरह खटक रहा है!

ऋषि! हाय!
ओहो! श्वेता की एक और दोस्त यहां पर मौजूद है! कैसी हो रिचा!
तुमने ऋषि को लाकर मेरा काम कर दिया! वर्ना मुझे ऋषि को लेने खुद जाना पड़ता! पर तुमने ये किया कैसे?
फिर वही सवाल! आम खाओ, रिचा! पेड़ मत गिनो! वैसे ऋषि से मिलकर तुम इतनी खुश क्यों हो रही हो?
क्योंकि ऋषि के आने से ध्रुव खुश हो गया है!
ओ समझी! नताशा को देखना चाहिए था कि ध्रुव की चिन्ता करने वाले और भी हैं!
अब छोड़ो ये बहस! हवन का समय हो गया है, और पंडित जी भी आ चुके हैं!
बस वही नहीं आई जिसको आना चाहिए था!
तुम ऐसा क्यों कर रही हो, नताशा?
अब मुझे हवन खत्म होने का इंतजार है ताकि मैं ध्रुव को वह जरूरी खबर दे सकूं, जिसको सुनना ध्रुव के लिए बहुत जरूरी है!

हवन निर्विघ्न समाप्त हो गया-
अब मुझे चलना होगा! इससे पहले कि रोबो या नताशा को ऋषि के गायब होने का पता लगे और रोबो सिटी में रेड एलर्ट घोषित हो जाए, मुझे ऋषि को वहां पहुंचाना होगा!
ऋषि को हम वैसे भी यहां नहीं रख सकते! कम से कम कोर्ट का आदेश मिलने तक तो नहीं!
पर जाने से पहले तुमको एक जरूरी खबर देनी है!
नागराज को बहु विवाह करने के अपराध में नगर निकाले की सजा मिली है! अब जब तक वह विसर्पी या भारती में से एक को तलाक नहीं दे देता, तब तक उसको वनवास में रहना होगा!
ओह! तो ये है उस ग्रहण का असर! बाबा गोरख-नाथ ने इसकी चेतावनी पहले ही दे दी थी!
विसर्पी पर भी यही सजा लागू होगी!
अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है! नागराज पर ऐसा केस कोर्ट में एक अंजान शख्स ने दायर किया था!
पर उस अंजान शख्स की तरफ से केस लड़ने वाली वकील का नाम मिस गीना था!
गीना! यानी नगीना! ओफ़! पहले मेरा घर और अब नागराज का संसार! नगीना कोई गहरा खेल खेल रही है!
यानी नागराज और विसर्पी को या तो जुदा होना पड़ेगा और या फिर उनको वन में रहना पड़ेगा!
जहां पर वे क्रूरपाशा और उसकी ब्लैक पॉवर्स के लिए आसान सा निशाना होंगे!
नहीं होंगे चंडिका! कम से कम मेरे रहते हुए तो नहीं!
अब तो मुझे नगीना का षड्यंत्र जानने में पर्सनल दिलचस्पी हो गई है, और इस षड्यंत्र का राज वहीं पर जाकर पता चल सकता है!
जहां पर नागराज हो!
क्योंकि वही है ब्लैक पॉवर्स का मुख्य निशाना!
19

ठीक है!
फिर तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने रास्ते जाती हूं!
पर तुम जाओगी कैसे?
वैसे ही, जैसे मैं आई थी!
चलो, ऋषि!
चंडिका आज कुछ ज्यादा ही रहस्यमयी लग रही है!
चारों तरफ रहस्य ही रहस्य हैं रिचा! और मुझे पूरा यकीन है कि ये सारे रहस्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं!
चंडिका अभी और भी रहस्यमय होने जा रही थी-
काम हो गया...
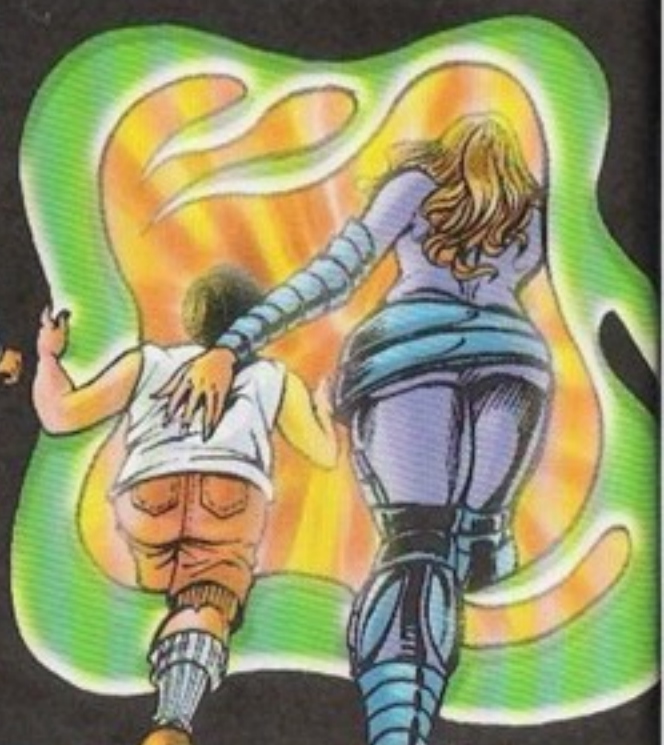
... नताशा ?
हां, बाबा! और हम एकदम सही समय पर पहुंचे थे! वर्ना रिचा तो रोबो सिटी के लिए रवाना होने ही वाली थी!
वैसे भी, ऋषि और मुझे तो श्वेता की बरसी में शामिल होना ही था!
श्वेता के जाने के बाद मैं उसको चंडिका के रूप में अभी भी जिन्दा इसीलिए रखे हुए हूं, क्योंकि मुझे उससे बहुत प्यार था!
जितना ध्रुव से है, शायद उससे भी ज्यादा!
तुम्हारे जाने का मकसद ध्रुव को रोबो की तरफ जाने से रोकना और नागराज की तरफ भेजना था नताशा! क्योंकि ध्रुव के बगैर नागराज की शक्ति आधी रह जाएगी! वे दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं!
ध्रुव, नागराज के पास जाने को निकल चुका है!
पर मुझे एक नई बात पता चली है! गीना असल में नगीना है!
अच्छा! यानी वह भी इस युद्धक्षेत्र में कूद पड़ी है!
अब हमको भी अपनी चालें और मोहरे सोच समझकर चलने पड़ेंगे!
बस मुझे यह नहीं समझ में आ रहा है कि रिचा मेरे घरेलू मामलों में अपनी टांग क्यों अड़ा रही है! वह ध्रुव के करीब क्यों आना चाहती है? अगर ऐसा ही चलता रहा तो मुझे आपके आदेश के खिलाफ अपने घर वापस लौटना ही होगा!
नहीं नताशा! अब परिस्थितियां व्यक्तिगत स्वार्थों से परे जा चुकी हैं! तुमको रोबो की सिटी में इस तरह से भेजने का तात्पर्य यही था कि तुम बिना शक पैदा किए हुए रोबो के गढ़ में लम्बे समय तक रह सको!
रोबो कभी न कभी इस युद्ध क्षेत्र में जरूर कूदेगा! उसकी शक्ति और उसका नेटवर्क इस युद्ध का पांसा पलट सकते हैं! वैसी स्थिति पैदा होते ही तुमको उस मोर्चे की बागडोर संभालनी होगी!
अब तुम जाओ! धनंजय का द्वार तुमको तुम्हारे कमरे तक पहुंचा देगा!
पर ध्यान रखना! तुम्हारे कदम न डिगेंगे और न पीछे हटेंगे!
ऐसा ही होगा बाबा!
नहीं मिल रहे! तुम हरामखोरों पर मैं इतने पैसे क्या इसीलिए खर्च करता आया हूं!
पर हम पूरे समय यहीं पर तैनात थे, ग्रैंडमास्टर! पलकें तक नहीं झपकाईं!

फिर वे गायब कैसे हो गए?
इस गलती का दंड तो भुगतना ही होगा!
माफी, ग्रैंडमास्टर, माफी!
जाओ, माफी दी!
नताशा! ऋषि! कहां थे तुम दोनों?
अपने कमरे में! छुपम छुपाई खेल रहे थे!
पर तुम लोग कहां छुपे थे? मेरे आदमियों ने तो एक-एक अल्मारी, एक-एक कोना और यहां तक कि ड्राअर तक खोल-खोलकर चेक किए थे!
वह भी मेरे सामने!
जगह बता देंगे तो अगली बार आप हमें ढूंढ लेंगे, नानाजी!
इसीलिए हम छुपने की जगह नहीं बताएंगे!
हैं न मम्मी!
यस, बेटा!
युद्ध में हर पैंतरा आजमाना पड़ता है-
कभी दुश्मन के घर में घुसकर वार करना पड़ता है-

तो कभी दुश्मन को खुली जगह पर खींचना पड़ता है-
अगर तुम दोनों वनवास पर जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी, दीदी!
तुम्हारे कष्ट बांटने का हक तो मुझे भी है, न!
है, पगली, है! पर हमारा घर वन नहीं, महानगर है! ये भवन है! और यह घर तभी कायम रहेगा जब कोई घर वाला घर में रहेगा इस घर की जिम्मेदारी सिर्फ तू ही संभाल सकती है!
ताकि जब हम वापस आएं तो ये घर हमको घर जैसा ही मिले!
ठीक है! तो मैं भी यहां पर एक कृत्रिम वन बनाऊंगी!
और जब तक तुम दोनों वापस नहीं आओगे तब तक मैं भी वहीं पर रहूंगी!
जिस हालत में तुम रहोगे उसी हालत में मैं भी रहूंगी!
और तब तक मैं एक काम और करूंगी! उस शख्स का पता लगाऊंगी जिसने नागराज पर केस किया है!
और जब वो मुझे मिल जाएगा तो मैं उसे... जान से मार दूंगी!
गुस्सा थूक दो भारती! विधि के विधान के आगे हम सभी विवश हैं! शायद वह शख्स भी विवश होगा! अब हमको शांत मन से विदा करो! हम जल्दी ही कोई न कोई रास्ता ढूंढकर वापस आएंगे!

चलो, विसर्पी!
मुझको तो समझा-बुझाकर जा रहे हो नागराज!
पर तुम इनको कैसे समझाओगे?
हे कालजयी! ये क्या हो रहा है?
हम तुमको नहीं जाने देंगे नागराज!
तुमको जाना है तो तुमको हमारी लाशों पर से गुजरना होगा!
हम अपनी जान दे देंगे!
हम ऐसे कानून को नहीं मानेंगे जो नागराज को महानगर से निकाल दे!
ये सब सही कह रहे हैं, नागराज! तुम इनके हर कष्ट, हर मुसीबत में साथ रहे हो! महानगर को तुमने अनगिनत बार विपत्तियों से बचाया है!
अब जब तुम पर मुसीबत आई है तो ये सब भला अपना मुंह कैसे मोड़ सकते हैं?
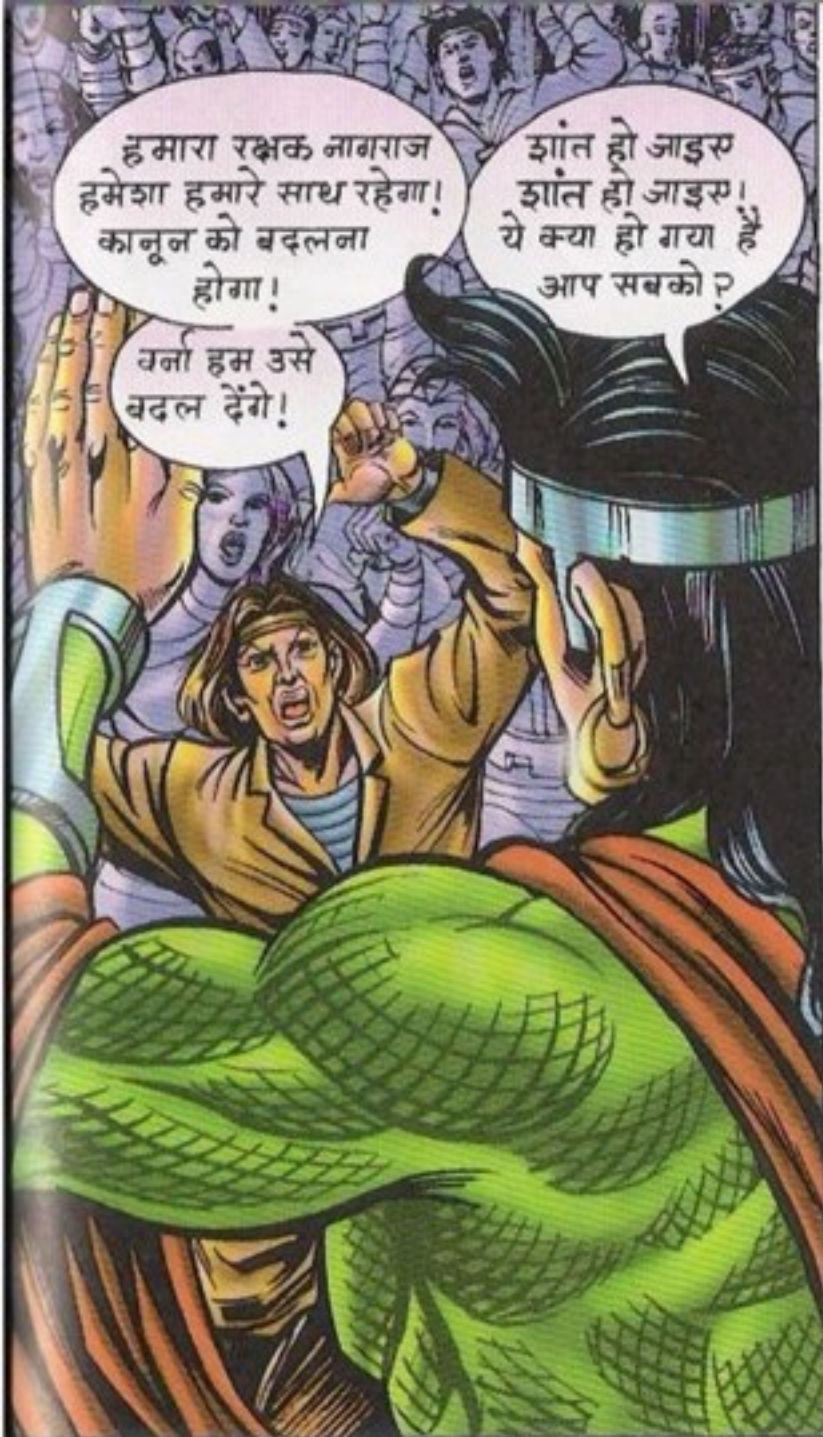
हमारा रक्षक नागराज हमेशा हमारे साथ रहेगा! कानून को बदलना होगा!
वर्ना हम उसे बदल देंगे!
शांत हो जाइए शांत हो जाइए। ये क्या हो गया है आप सबको?
आप लोग नागराज से बहुत प्यार करते हैं न? बहुत सम्मान देते हैं मुझको! भगवान जैसा दर्जा दे रखा है आप लोगों ने मुझको!
पर क्यों? कभी सोचा है कि ऐसा क्यों?
क्योंकि नागराज ने हमेशा आपको ऐसे लोगों से बचाया है जो समाज के बनाए नियम और कानूनों को तोड़ते हैं! और ऐसा करके वे आप सबके लिए खतरा बन जाते हैं!
क्या कभी आप ऐसे नागराज को भी इतना ही प्यार और सम्मान देंगे जो खुद कानून तोड़ता हो? अपने लिए नए-नए नियम बनाता हो?
नहीं! आप ऐसा नहीं करेंगे! कानून और नियम सबके लिए समान हैं! जाने अंजाने में मुझसे जो भी भूल हुई है उसका दंड मुझे भुगतना होगा! आपको कानून का सम्मान करने वाला नागराज चाहिए या कानून का अपमान करने वाला नागराज? बोलिए!
तुम्हारा कहना उचित है नागराज! पर अगर तुम वन जाओगे तो पूरा जनसमूह तुम्हारे साथ चलेगा!
जो कष्ट तुम भोगोगे वे कष्ट हम सभी मिलकर बांटेंगे!
नहीं! आप सब यहीं रहेंगे और अब से हर कोई नागराज बनकर जिएगा! नोच लेगा उन आंखों को जो समाज के खिलाफ उठेंगी!
और ऐसा करके आप सब महानगर को उन भूखे भेड़ियों के लिए खुला छोड़ देंगे जो अपने आपको ब्लेक पॉवर्स कहते हैं!
हां! इतना वादा जरूर करता हूं कि मैं जल्दी ही वापस आऊंगा!

पर तुम वापस आओगे कैसे? तुम्हारे साथ दो पत्नियों वाली समस्या तो जुड़ी ही रहेगी! और जब तक यह समस्या रहेगी तब तक तुम किसी भी नगर में प्रवेश नहीं पा सकते!
कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा! धीरज रखिए!
और वह रास्ता मेरे पास है!
आप?
मैं एक एडवोकेट हूं! अभी-अभी मैंने 'लॉ' की पढ़ाई पूरी की है! और जब से मैंने तुम्हारे केस के बारे में सुना है तबसे मैं इसी केस की स्टडी कर रही हूं! और मेरा ख्याल है कि मैंने उस कानूनी खामी को ढूंढ लिया है जो यह साबित कर देगा कि तुमने दूसरा विवाह करके कोई अपराध नहीं किया है!
मेरे बारे में इतना सोचने के लिए शुक्रिया!
लेकिन जब तक तुम रिसर्च पूरी नहीं कर लेती तब तक तो मुझे वन में जाना ही होगा!
क्या है वह कानूनी खामी?
अभी मुझे थोड़ी और रिसर्च की जरूरत है! वह पूरी हो जाए फिर सारी दुनिया वह नुक्ता जान जाएगी!
लेकिन ये मेरा वादा है कि सात दिनों के अंदर-अंदर तुम कानूनी रूप से महानगर में आ सकोगे।
और वह भी विसर्पी के साथ!

जाओ नागराज! लेकिन तुमको जब तक मैं वापस नहीं ले आती तब तक मैं अन्न का एक भी दाना मुंह में नहीं डालूंगी!
एक बार तुमने मुझे नई जिन्दगी दी थी! आज तुमको तुम्हारी पुरानी जिन्दगी मैं दूंगी!
ये लड़की क्या बकवास कर रही है? ये है कौन?
क्या ये ऐसा कर सकती है?
पता नहीं!
लेकिन जिस आत्मविश्वास से इसने ये बात पूरी भीड़ के सामने कही है, उससे लगता है कि ये ऐसा कर सकती है!
लेकिन कैसे?
ये पता लगाने के लिए मुझे इस लड़की के पास महानगर जाना होगा!
गीना के रूप में!
आऽऽऽह!
क्या हुआ, नगीना?
मेरा गीना वाला रूप नष्ट हो गया है! मैं उसे धारण नहीं कर पा रही हूं!
पर क्यों?

महानायक नागराज
तृतीय अध्याय
न जाने कैसे उसे पता चल गया है कि मीना, नगीना का ही दूसरा रूप है!
यानी... अब तुम इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकती!
गोरखनाथ!
गोरखनाथ?
खैर! उस लड़की से निपटने के लिए मेरे पास और भी हथकंडे हैं!
हां! ऐसी शक्ति सिर्फ उसी के पास है जो इच्छाधारी शक्ति पर प्रतिबंध लगा सके!
फिलहाल तो नहीं! और इस रूप में मैं महानगर भी नहीं जा सकती!
लेकिन अब तुम्हारे पास समय बहुत कम है! नागराज ज्यादा दिनों तक नगर से बाहर नहीं रहेगा!
फिर क्या करना होगा?
विसर्पी को नागराज से दूर करना होगा!
विसर्पी का हरण करना होगा!
और ये काम तुमको खुद करना होगा, क्रूरपाशा! इस बार हम किसी दूसरे पर भरोसा नहीं कर सकते!
क्योंकि इस बार की असफलता बहुत महंगी पड़ेगी!
पर हरण मैं करूंगा कैसे? मैंने आज तक कोई हरण किया ही नहीं है!
वह तुमको मैं बताती हूं!
सुनो!
षड्यंत्र रचने में नगीना का सानी नहीं था-

और इस बात को क्रूरपाशा भी अच्छी तरह से जानता था-
वाह नगीना, वाह! ये तो नागराज के मुंह पर एक थप्पड़ जैसा होगा! जब उसकी आंखों के सामने से ही मैं विसर्पी को ले जाऊंगा!
और दूसरा थप्पड़ मैं तुझे तब मारूंगा जब विसर्पी मेरी हो जाएगी!
बगैर इच्छाधारी शक्ति के तू वैसी ही हो गई है जैसे बिना विष का सांप! अब क्रूरपाशा को तेरी जरूरत नहीं है!
मेरे वापस आने तक एक नया महल बनवाकर रखना, गुरुदेव! मैं अलंध्या में ब्रह्मांड की महारानी को लेकर आने वाला हूं!
तेरी तारीफ के पीछे छिपी कुटिलता तो मैं समझ रही हूं क्रूरपाशा! तू मौका पाते ही मेरा पत्ता साफ कर देने के चक्कर में है! पर तेरे वापस आने से पहले मैं एक नया पत्ता खोलकर रखूंगी!

बस! अब यहां से हम अकेले ही आगे जाएंगे!
आप सब कृपया अंडर-ग्राउंड सिटी में वापस चले जाएं!
यहीं रुक जाओ नागराज! तुम नगर से तो बाहर आ ही चुके हो! हम यहीं पर तुम्हारे लिए एक भवन बना देंगे।
ऐसे तुम्हारी सजा भी चलती रहेगी, और तुम हमारे साथ भी रहोगे!
करेक्ट!
काश! ऐसा हो सकता! पर कानूनी नक्शे के अनुसार महानगर की सीमा यहां से बीस किलोमीटर आगे तक है! हमको नगर की कानूनी सीमा से बाहर जाने का आदेश मिला है!
तब तो मज़ा आ जाएगा! है न, पापा!
हां बेटा! वहां तक तो मैं भी कभी नहीं गया! ऐसी ट्रेकिंग का तो मुझे बरसों से इंतजार था!
ये वही प्यार है नागराज, जो तुमने इनको दिया था! अब ये उसे दुगुना करके तुमको लौटा रहे हैं!
मुझे तो ये सोच-कर ही शर्म आ रही है कि मेरे कारण इतने लोगों को दुःख पहुंचा है!
सब अपने-अपने टेंट्स लाए हो न भाई लोगों?
सब तैयारी के साथ आए हैं!
कमाल है! ये तो हमारा साथ देने के लिए पहले से ही तैयारी करके आए हैं!
कानून, सुख-दुःख नहीं, न्याय देखता है विसर्पी! सजा तो हमें भुगतनी ही होगी!
और वह भी अकेले!

उस रात महानगर की सीमा से बाहर प्यार के डेरे लगे थे-
और प्यार की इस शक्ति ने-
एक बड़ी मुसीबत को टाल दिया था-
ये कैसा 'नगर निकाला' है! क्या पूरे नगर को ही महानगर से निकाल दिया गया है?
इस वक्त अपनी चाल चलनी खतरनाक हो सकती है! इंतजार करना होगा! और नगीना की चाल को ही आजमाना होगा!
अगली सुबह का सूरज भी पिछले दिन की तरह ही निकला था-
पर आज का दिन-

पिछले दिन की तरह बिल्कुल नहीं था-
नागराज कहां गया ?
हम सोते रह गए और नागराज चला गया !
हमारा प्यार भी उसको रोक नहीं पाया !
नागराज चला गया !
नहीं, दोस्तों ! नागराज तो एक बहुत अच्छी बात सिखाकर गया है !
फर्ज के रास्ते में अगर प्यार की जंजीर पैरों में फंसे तो उसे तोड़ दो ! चाहे पैर लहूलुहान हो जाएं !
हमारी आंखें खून के आंसू रो रही हैं तो नागराज का दिल भी जरूर छलनी हो रहा होगा !
ये ज्वालामुखी और उसके आसपास मीलों तक फैला ये जंगल महानगर और नाथगढ़ नगर की सीमा है ! ये क्षेत्र किसी भी नगर में नहीं आता ! इसीलिए यहीं पर गुजारेंगे हम अपना...

अध्याय चतुर्थ
वनवास
जगह तो अच्छी है नागराज! पर ये वनवास तुमको अकेले ही काटना होगा!
विसर्पी! ये तुम क्या कह...
तुमने मुझसे विवाह किया, मुझे मेरे घर से, मूलक्षेत्र की सुख-सुविधाओं से दूर किया! क्या यही दिन दिखाने के लिए?
मुझे जंगल-जंगल भटकाने के लिए? सुख नहीं दे सकते तो कम से कम दुःख तो मत दो!
सही कह रही हूं नागराज! और मुझे ये जो सजा मिली है, वह भी तुम्हारी वजह से ही मिली है!
अब मुझे किसी नगर में प्रवेश नहीं मिल सकता! सिवाए एक नगर के! मूलक्षेत्र!
और मैं वहीं जा रही हूं! जब तुम्हारा वनवास खत्म हो जाए तो सूचना भेज देना! मन हुआ तो आ जाऊंगी!
तुम सही कह रही हो, विसर्पी! मैंने सोचा था कि विवाह के बाद तुम मेरी जिम्मेदारी हो! इसीलिए मैं तुमको हमेशा अपनी नजरों के सामने रखना चाहता था। शायद मैं स्वार्थी हो गया था!
सजा तो मुझे काटनी ही है! वह मैं यहीं पर काटूंगा! पर उससे पहले मैं तुमको खुद मूलक्षेत्र छोड़कर आऊंगा!
उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी नागराज! मेरे अनुचर नाग मुझे लेने आ चुके हैं!
अलविदा कहना नहीं चाहती! इसीलिए विदा, नागराज!
अपना ख्याल रखना विसर्पी!

आप पैदल क्यों चल रही हैं, कुमारी? हम आपके लिए यान लाए हैं!
जितनी देर इस जंगल में चलूंगी, उतनी ही देर तक मुझे ये एहसास होता रहेगा कि मैं नागराज का दुख बांट रही हूं!
पर आप तो नागराज से दूर इसीलिए आ रही हैं न, क्योंकि वह आपको दुःख दे रहा है!
चुप रह! नागराज अब तुम्हारे नायक हैं! जबान खोलो तो सोच-समझकर बोलो!
यान वापस भेज दो!
या चाहो तो तुम लोग यान में बैठ सकते हो!
मैं पैदल ही चलूंगी!
नागाधर, फननाथ! कहां गए दोनों?
आदेश मिलते ही यान पर बैठने चले गए!
आलसी!
इस जंगल में कुछ अनोखी चीजें भी हैं! फर वाला तना! ऐसा वृक्ष तो मैंने पहले कभी नहीं देखा!
एक और भी है! तना ऐसा है तो इसके पत्ते कैसे...?

चियांऽऽऽ
सेंssssss !
ईssssssss
ये तने नहीं इसके हाथ थे!
ये तो विसर्पी की चीख थी! साथ में किसी जानवर की गरज थी!
मैंने उसके कहने पर उसको अकेला क्यों छोड़ा? मुझे उसके साथ जाना चाहिए था!
फिलहाल नागराज विसर्पी से काफी दूर था-
और नुकीले दांतों से भरा वह जबड़ा विसर्पी के काफी पास-

पर वह जबड़ा अभी किसी और चीज से भी भरने वाला था–
चियाां!
कौन?
यांSSSSS चिंचिंचिंSSSS
चियांSSS चींची! हींईSSSS
चींईSSSS! ई येSSS
ये चींईइइ! जाSSSSS
ईSSSS फुइइइइ!
झझझ! झाबाझ!
तुम?
तुम यहां पर कैसे
विसर्पी! विसर्पी, तुम ठीक तो...
हे भगवान! ये तो...

एक विशालकाय गुरिल्ला है! पर तुम्हारे सामने ये आज्ञाकारी बच्चे की तरह क्यों बैठा है?
क्योंकि मुझे बचाने के लिए ऐन वक्त पर इस 'बच्चे' का बाप आ गया था!
ध्रुव! शुक्र है भगवान का! पर तुमने इस गुरिल्ले को काबू में कैसे किया?
ज्यादा कुछ नहीं! बस, ज़रा सा डांटना पड़ा कि ऐसी शरारतें नहीं किया करते! गुरिल्लों की भाषा सीखना आज काम आ गया!
पर तुम यहां पर आए कैसे? और क्यों आए?
बस! तुम्हारे 'नगर-निकाले' के बारे में सुना तो दोस्त का साथ देने चला आया! ये सोचकर कि कहीं ब्लैक पॉवर्स इस मौके का फायदा न उठा लें!
वैसे भी ज्वालामुखी की रहस्यमय गैसों से भरे इस जंगल में विशालकाय गुरिल्ले जैसे और भी प्राणी हो सकते हैं!
तुम लोगों का यहां पर अकेले रहना ठीक नहीं है! जब तक तुम लोग यहां पर रहोगे, मैं भी साथ ही रहूंगा!
मैं खतरों से खुद निपट सकता हूं दोस्त!
मैं तुम्हारी नहीं, विसर्पी की सुरक्षा के बारे में सोच रहा हूं!
वैसे तुमने विसर्पी को जंगल में अकेला छोड़ा क्यों?
क्योंकि ये मुझे छोड़कर जा रही है!
मूलक्षेत्र!
ये मेरे साथ जंगल के दुःख बांटना नहीं चाहती!

व्हाट! ये तो मैं मान ही नहीं सकता कि विसर्पी तुम्हारा साथ छोड़ने की सोच भी सकती है!
क्या ये सच है, विसर्पी?
हां! ये सच है! मैं नागराज को छोड़ना चाहती हूं! इससे दूर जाना चाहती हूं!
क्योंकि मुझसे भारती का वह दुख देखा नहीं जाता जो उसने खुशी की आड़ में छुपा रखा है!
मैंने तो सोचा था कि केस करने से शायद नागराज मुझे छोड़ देगा, क्योंकि ये कानून को भगवान मानता है, पर...
क्या? वह केस मुझ पर तुमने खुद दायर किया था!
हां! पर तुम्हारी पत्नी की हैसियत से नहीं, विश्व के एक नागरिक की हैसियत से!
पर वह दांव भी बेकार गया! तुम मुझे छोड़ने पर राजी नहीं हुए!
अब मैं अभी भी तुमको छोड़कर मूलक्षेत्र न जाती तो फिर कभी तुमसे दूर नहीं जा पाती!
और जिन्दगी भर अपने आपको स्वार्थी होने के लिए धिक्कारती रहती!
ये तुमने ठीक नहीं किया विसर्पी! ऐसा करने से तुम्हारी वकील गीना को ये भ्रम हो गया है कि तुम नागराज से नफरत करती हो और उससे दूर जाना चाहती हो!
हां! पर इससे क्या फर्क पड़ता है?
फर्क पड़ता है, विसर्पी!
क्योंकि तुम्हारी वकील गीना...
वास्तव में नगीना है!
क्या?
हां! और ये तुम भी जानती हो कि नगीना क्रूरपाशा से जा मिली है!
उसने ये खबर क्रूरपाशा को जरूर दी होगी! और ये जानने के बाद क्रूरपाशा के हौसले बढ़ जाएंगे! अब वह तुमको पाने का प्रयास करेगा!
अब तुम्हारा यहां रुकना वाकई ठीक नहीं है!

तुम मूलक्षेत्र में ही सुरक्षित रह सकती हो! और मैं तुमको खुद वहां तक छोड़कर आऊंगा!
मैं भी साथ चलता हूं!
नहीं नागराज! तुमको और विसर्पी को थोड़े वक्त के लिए अलग-अलग ही रहना चाहिए! सुना है कि दूर रहने से प्यार बढ़ता है!
और सुना है तो आजमाने में कोई हर्ज नहीं है!
सही कहा, ध्रुव! शायद हमें सोचने के लिए कुछ वक्त चाहिए!
पर जंगल के छोर तक तो हम साथ रह सकते हैं न?
हर आड़ में छुपे खतरे घात लगाने के लिए तैयार थे-
पर दो महायोद्धाओं को इस रूप में देखकर वे खतरे भी शायद दुबकने में ही अपनी भलाई समझ रहे थे-

ये रहा जंगल का अंत! इसके आगे हम यान पर जाएंगे!
पर नागयान भी यहां मौजूद है, ध्रुव!
उसी यान पर जिससे मैं यहां पर आया था!
मैं अभी वापस आता हूं नागराज!
तुमको पाने के लिए ब्लैक पॉवर्स पहला हमला नागयान पर ही करेंगी!
मेरे यान में तुम ज्यादा सुरक्षित रहोगी!
आओ!
आऽऽऽह!
क्या हुआ, विसर्पी?
मैं... मैं इस स्थान से आगे नहीं आ पा रही हूं!
आगे कोई अदृश्य दीवार है!
रुको! मैं देखता हूं!
सचमुच! इसके पार तो मैं भी नहीं आ पा रहा हूं!
ब्लैक पॉवर्स!
पीछे हटो ध्रुव!
ये अवरोधवंस इस रोक को चकनाचूर कर देगा!

अवरोधध्वंस जैसा शक्तिशाली आयुध इस अवरोध में समा गया! बगैर कोई नुकसान पहुंचाए! असंभव!
असंभव तो है! पर सिर्फ यहां से बाहर आ पाना!
अंदर आने पर कोई पाबंदी नहीं है
एक नई ब्लैक पॉवर!
मैं ब्लैक पॉवर नहीं हूं!
बाधाबंध हूं! और मुझको स्वामी का आदेश है कि कोई इस वन से बाहर न जाने पाए!
कौन हैं तुम्हारे स्वामी? इस वन के राजा? क्या ये जंगल उनकी जागीर है?
क्षमा कीजिए! पर मुझको ये बताने का आदेश नहीं है!

तुम्हारे स्वामी हमारे स्वामी नहीं हैं! इसलिए हमारा रास्ता छोड़ो और हमको जाने दो!
क्षमा करें! परंतु ये आदेश तो सिर्फ स्वामी ही दे सकते हैं!
तो फिर हमें तुम्हारे स्वामी को ही यहां बुलाना पड़ेगा! तुमको बचाने के लिए तो वे जरूर आएंगे।
आयुध का वार जानलेवा तो नहीं था-
पर उसका 'शॉक' बाधाबंध को अचेत कर देने के लिए पर्याप्त था-
लेकिन-
आयुध बेअसर रहा!
तुम्हारी कोई शक्ति मुझ पर असर नहीं करेगी, नागराज! तुम्हारे महाआयुध भी बेअसर सिद्ध होंगे! क्योंकि मैं एक शक्ति हूं! कोई जीवित प्राणी नहीं!
अब बातें बहुत हो गईं! मुझे इसकी भी आज्ञा नहीं है! विदा, मित्रो!
आशा करता हूं कि इस वन में आपका समय अच्छा गुजरेगा!
चला गया। पर ये कैसी शक्ति थी।
अगर ये सचमुच ब्लैक पॉवर्स नहीं है तो है क्या?
और ये हमको रोककर क्यों रखना चाहता है?

कहीं ये तुम्हारी कोई चाल तो नहीं है, नागराज?
मुझे रोककर रखने के लिए!
ये भाग्य की चाल है विसर्पी!
ईश्वर नहीं चाहते कि हम और तुम अलग रहें!
चलो मैं तुम दोनों के ठहरने का कुछ अच्छा सा इंतजाम करता हूं!
और फिर-
ये तो कमाल का घर है ध्रुव! ये इंतजाम तुमने कैसे किया?
थोड़ी सी पैरों की कसरत करनी पड़ी! और मुझे यहां पर एक दुर्घटनाग्रस्त यान मिल गया! बस उसी की जरा सी मरम्मत करके मैंने तुम्हारा घर तैयार कर दिया!
तुम्हारा नहीं, हमारा बोलो ध्रुव! इस यान में एक, नहीं पांच बड़े-बड़े कमरे हैं। तुम्हारे ठहरने की भी पूरी जगह है!
नागराज, विसर्पी और ध्रुव का शानदार महल तैयार हो गया था-

पंचम अध्याय आरोप मुक्त
परन्तु बनने से पहले ही इस आडियाने पर गिरने के लिए बिजलियां कड़कने लगी थीं-
ये तू क्या कह रहा है, चेले... सॉरी... सम्राट?
शब्दों को बाद में ठीक करते रहना गुरुदेव! पहले इस मुसीबत को दूर करो
मैं विसर्पी का हरण तो कर लूंगा, पर इस वन से बाहर नहीं आ पाऊंगा!
ऐसा हुआ तो नागराज मुझसे टकराएगा और अभी मेरे हाथों मारा जाएगा! जबकि मैं उसे तड़पा-तड़पाकर मारना चाहता हूं!
ये अवरोध वायु में भी फैला हुआ है! मेरा यान जंगल की सीमा के अंदर तो बेरोक-टोक उड़ रहा है, पर बाहर नहीं आ पा रहा है!
ऐसी तो सिर्फ एक ही शक्ति है जो तेरा और नागराज का रास्ता रोक सके!
और मैं जानता हूं कि वह शक्ति किस-किस शख्स के पास है!
बस मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा उसने क्यों किया है?
तुझे पक्का यकीन है कि उस शक्ति बाधा-बंध से नागराज भी पार नहीं जा पाया!
मैंने अपनी आंखों से देखा है, गुरुदेव? और मैं भी यहां पर फंस गया हूं!
अब ये बताओ कि मैं क्या करूं?
तू चिन्ता मत कर चेले! तेरा गुरू तुझे वहां से निकाल लेगा!
तू तो बस हरण की तैयारी कर!
और मैं तैयारी करता हूं उस शख्स से निपटने की जिसने बाधा-बंध को भेजा है!

नागराज और विसर्पी के दुश्मन कम नहीं थे-
तो शुभचिन्तकों की संख्या में भी कोई कमी नहीं थी-
ओफ़! मुझे अन्न न खाने की कसम नहीं खानी चाहिए थी!
नागराज को वापस लाने के लिए मुझे पूरी शक्ति की जरूरत है और मुझे अभी से चक्कर आ रहे हैं!
पर इससे पहले कि महानगर में 'कृत्रिम सूर्य' उगे, मुझे इन चार मोटी-मोटी किताबों में से कई प्वाइंट ढूंढ़ने हैं!
क्योंकि मुझे कल की तारीख में ही नागराज को वापस बुलाने की याचिका कोर्ट में दाखिल करनी है!
लो, फिर से मुझे चक्कर आ गया!
नहीं! ये चक्कर नहीं था!
मुझे चक्कर आ सकता है पर सामानों को नहीं आ सकता!
ये जरूर भूकंप का झटका था!
और ये झटका काफी तेज था!
अभी ऐसी और विपत्तियां आएंगी बेटी!
आप... आप तो दादा वेदाचार्य हैं! मेरा सौभाग्य है कि आप मेरे घर पर आए हैं!
और इसका कारण नागराज और विसर्पी का विवाह होगा!
उनका विवाह एक महा-ग्रहण से ठीक पहले हुआ है और वर-वधू का नगर प्रवेश ग्रहण के दौरान हुआ है! उस अशुभ घड़ी की काली छाया नए जोड़े पर पड़ चुकी है!
स्वागत के लिए धन्यवाद बेटी! पर मैं यहां पर तुमसे सिर्फ ये कहने आया हूं कि नागराज और विसर्पी को वापस लाने का ख्याल छोड़ दो! उनका आना महानगर में सिर्फ बरबादी लाएगा! और कुछ नहीं!

पर मैं तो नागराज और विसर्पी को वापस लाने का वादा कर चुकी हूं!
और किसी विवाह से भला पूरे शहर में विपदा कैसे आ सकती है? शायद आप मैडम भारती के कारण उनको वापस बुलाना नहीं चाहते!
ये बात तो पूरा शहर जानता है! मैं इस विवाह से खुश नहीं हूं और मैंने इसे छुपाने की कोशिश भी कभी नहीं की!
पर ये भी सच है कि उनका महानगर में प्रवेश एक महाग्रहण की अवधि के दौरान हुआ है!
ये जोड़ा जहां पर भी साथ रहेगा, वहां पर मुसीबतें आएंगी ही आएंगी!
अगर ये जोड़ा महानगर में वापस आया तो अभी आए भूकंप जैसी प्राकृतिक विपदाएं आती ही रहेंगी!
अगर मैडम भारती के कारण कभी आप पर कोई विपदा आ जाए तो क्या आप उनका साथ छोड़ देंगे?
या उनको घर से निकाल देंगे? 'हां' या 'न' में जवाब दीजिए दादाजी!
नहीं!
नागराज और विसर्पी भी हमारे अपने हैं! क्या महानगर उनको सिर्फ इस डर से छोड़ देगा कि उनके कारण हम पर विपदा आ सकती है!
मैं जो कहने आया था वह मैंने कह दिया है!
आगे तुम खुद समझ जाओ तो बेहतर है!
दादाजी चेतावनी दे रहे थे या धमकी!
खैर जो भी हो! वर्ल्ड नेट पर चेक करना होगा कि ये भूकंप ही था या कुछ और!
नहीं, नहीं! नेट पर फ्लैश हो रहा है!
ये भूकंप ही था, और इसका केन्द्र... ओ माई गॉड!

इसका केन्द्र तो महानगर से लगभग तीस किलोमीटर पूर्व में था! यानी यहां पर!
यानी सैकड़ों वर्षों से सोए ज्वालामुखी माऊंट मेरमा में फिर से हलचल शुरू हो रही है!
पर ये तो वही स्थान है जहां पर नागराज और विसर्पी को सेटेलाइट इमेजिंग से देखा गया था!
वे वहां पर पहुंचे और ज्वालामुखी में हलचल शुरू हो गई!
कहीं दादाजी का कहना सही तो नहीं है! मुझे चेक करना होगा! वर्ना ये ज्वालामुखी एक पूरे बड़े शहर की तबाही का कारण बन सकता है!
हो सकता है! पर तू मत घबरा!
तेरी मौत का कारण वह ज्वालामुखी नहीं...
...हम होंगे!
घनघोर और बूंदाबांदी!
सुना है तूने नागराज और विसर्पी को वापस बुलाने की कसम खाई है!
पर उससे पहले तेरी मौत तुझे बुला रही है!
आ!

आ!
आ TTTTT
अब नागराज वापस आए न आए...
...ये तो वापस आने से रही!

नागराज ने मेरे पापा को एक बार सामान्य जीवन जीने का तोहफा दिया था। और आज वही तोहफा मैं उसे देना चाहती हूं।
ये तो वापस आ गई! वह भी आग उगलते हुए!
और इस काम में जो रोड़ा बनकर बीच में आएगा वह फ्लेमिना से टकराकर धुआं बन जाएगा!
ओऽऽऽ! इस सूर्य जैसी प्रचंड उष्मा के सामने हमारी शक्तियां ठहर नहीं सकतीं!
तो फिर क्या करें?
भागोऽऽऽ
भाग गए दोनों शैतान! पर भूकंप के, दादा वेदाचार्य के, और इन दोनों शैतानों के आने से एक बात तो स्पष्ट हो गई है!...
...कि मुझे नागराज को जल्दी से जल्दी महानगर में वापस बुला लेना पड़ेगा।
कृत्रिम सूर्य का उगना शुरू हो गया था-

और महानगर नाम के भूमिगत शहर में एक नया दिन शुरू हो चुका था-
आप अपना पक्ष कोर्ट के सामने रख सकती हैं, मिस शमा!
माई लेडी, नागराज और विसर्पी को जिस आधार पर 'नगर निकाला' दिया गया है, वह कानूनी रूप से वैधानिक नहीं है!
क्यों?
क्योंकि यह कानून जिस विवाह के संदर्भ में बनाया गया है वह दो इंसानों के बीच में होने वाला विवाह है! जबकि विसर्पी एक इंसान नहीं, इच्छाधारी सर्प है!
उनसे विवाह करके न तो नागराज ने किसी कानून का उल्लंघन किया है और न ही विसर्पी ने! नाग और इंसान के विवाह के संबंध में कोई कानून बनाया ही नहीं गया है!
इस 'डाटा बैंक' में मेरे तर्क से संबंधित सभी जरूरी डाक्युमेंट और रिफरेंसेज मौजूद हैं!
आपका कहना सही है मिस शमा!
इन नए तर्कों की रोशनी में ये फैमिली कोर्ट नागराज और विसर्पी पर लगे सारे आरोप वापस लेती है और उनको विश्व में किसी भी नगर में आ-जा सकने की इजाजत प्रदान करती है!
नागराज और विसर्पी को इस ऑर्डर की एक डिजिटल कॉपी भेज दीजिए!
अगर कोर्ट की इजाजत हो तो मैं ये संदेश नागराज के पास खुद पहुंचाना चाहूंगी, माई लेडी!
इजाजत है!
और कांग्रेचुलेशंस, मिस शमा!
आपने हम सबके सिर से एक बड़े बोझ को उतार दिया है!
अच्छे दिन अब दूर नहीं थे-

षष्ठम अध्याय हरण
पर बुरे दिन भी काफी पास थे-
हमारी तो पूरी कहानी तुम जानते ही हो ध्रुव! पर ये तो बताओ कि तुम्हारा और नताशा का कैसा चल रहा है! अब तो तुम्हारा बेटा भी काफी बड़ा हो गया होगा!
काफी शरारती भी हो गया है! हर जगह मेरे साथ जाने की जिद करता है! अरे, वह तो यहां भी मेरे साथ आना चाहता था!
ध्रुव को ज्यादा झूठ नहीं बोलना पड़ा-
ज्वालामुखी फट रहा है!
उसके मुहाने से लावा तोप के गोले की तरह निकल रहा है!
नहीं विसर्पी!
ज्वालामुखी जब फटता है तो लावा फटकर चारों तरफ फैलता है!
लावा के ये गोले सिर्फ हमारी तरफ ही आ रहे हैं! जैसे कि कोई निशाना साधकर उनको इधर फेंक रहा हो!

और 'वह' कौन है इसका पता तो लगाना ही पड़ेगा!
चलो!
...तो मैं तुमको बुला भेजूंगा!
ये 'संपर्क नाग' है! मैं इससे नाग संकेतों के द्वारा जुड़ा रहूंगा!
अगर ये फन फैला ले तो समझ जाना कि मैं मुसीबत में हूं!
पर ऐसा होगा नहीं!
नहीं, ध्रुव! विसर्पी यहीं रुकेगी! और इसकी रक्षा के लिए तुमको भी यहीं पर रुकना पड़ेगा!
ठीक है! पर अगर तुम अकेले इस मुसीबत से न निपट पाए तो...
भगवान करे ऐसा ही हो!
षड्यंत्र की इस शतरंज के हर खाने में मोहरे बैठाए जा चुके थे-
अब मोहरों के चलने का वक्त आ गया था-
जमीन फट रही है, विसर्पी!
हम यहां पर भी सुरक्षित नहीं हैं!
पर हम जाएं कहां? जंगल से बाहर हम जा नहीं सकते...
हम बाहर नहीं जा सकते...

लेकिन मेरा यान अंदर तो आ सकता है न!
अब कम से कम हम जमीन के फटने से सुरक्षित हैं!
अब हमको किसी न किसी तरह से इस जंगल से बाहर निकलने का प्रयास करना होगा!
ताकि तुमको किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़कर मैं नागराज के पास जा सकूं!
ओफ़! यान अभी भी अवरोध से बाहर नहीं आ पा रहा है! आखिर ये अवरोध किसने लगाया है और वह हमको रोकना क्यों चाहता है!
उधर देखो ध्रुव!
वह क्या चीज है?

नागराज को खतरे के केन्द्र तक पहुंचने के लिए आग की बारिश पार करनी पड़ रही थी-
लेकिन नागराज को तो आग की नदी भी नहीं रोक सकती थी-
पहुंच गया! पर यहां तो कोई नजर नहीं आ रहा है!
क्या दुश्मन वार करने के बाद भाग गया?
क्योंकि दुश्मन अब उसके सामने था-
और नागराज की हथेली भी शायद उससे बड़ी थी-
तुम्हारी मौत का फरिश्ता थंबू तुम्हारा स्वागत करता है!
नर्क के द्वार पर तुम्हारा स्वागत है नागराज!
शायद नागराज असली खतरा पार कर चुका था-
तू लावे की बरसात कर रहा था, गिट्टे! नहीं ये नहीं हो सकता! मुझे यकीन नहीं हो रहा है कि तू ऐसा कर सकता है!
जिस नागराज से चट्टानें भी टकराकर चूर-चूर हो जाती हैं, उसको क्रूर-पाशा एक कंकड़ से चोट पहुंचाना चाहता है!
थंबू तो मुझे ब्लैक पॉवर्स प्यार से बुलाती हैं...
दुश्मन मुझे...

... ब्लैकव्यूम कहते हैं!
अंतरिक्ष की सबसे बड़ी शक्ति है मेरे पास! वैक्यूम की शक्ति!
वह शक्ति जो तारों की गति और उनकी गर्मी को भी सह सकती है!
पर देखते हैं कि इसकी वैक्यूम शील्ड कितना दबाव सह सकती है!
इसी वैक्यूम शक्ति की शील्ड मेरा कवच है और इस कवच के पार तेरे कोई वार नहीं जा सकते, नागराज!
नागराज का ध्यान और गहरा होता गया-
ओह! ये तो तिल का ताड़ बन गया!

और वैक्यूम शील्ड पर दबाव बढ़ता चला गया-
अब शील्ड पर धरती के केन्द्र जितना दबाव था-
आह!
अब या तो वैक्यूम शील्ड को टूटना था -
या नागराज के ध्यान को-
मेरी शील्ड को तो सूर्य का दबाव भी नहीं तोड़ सकता नागराज! फिर तेरी शक्ति किस गिनती में है!
अब तू देख कि दबाव वास्तव में क्या होता है!
और धरती पर आग की दरारें उभरने लगीं-
अब ये दरारें वहीं पर जाकर खत्म होंगी जहां पर महानगर का अंत होता है!
अब महानगर माचिस की तीली की तरह सुलग उठेगा!
वैक्यूम शील्ड एक कवर की तरह लावे पर दबाव बढ़ाती चली गई-
सबसे मजे की बात तो ये है कि तू महानगर और उसके करोड़ों बाशिंदों को चीख-चीख कर मरता हुआ देखेगा! और कुछ भी नहीं कर पाएगा! क्योंकि तेरा कोई भी हथियार वैक्यूम शील्ड को पार नहीं कर पाएगा!

SATAN JAIL
लावे से भरी दरारें तेजी से महानगर की तरफ बढ़ रही थीं-
और उनके रास्ते में सबसे पहले आने वाली इमारत थी अंडरग्राउंड सिटी महानगर से थोड़ी दूर स्थित सैटन जेल-
पृथ्वी के कुछ सबसे खूंखार चुनिन्दा अपराधियों से भरी एक ऐसी जेल जहां का भगवान था क्रूरपाशा और जहां का धर्म था ब्लैक पॉवर्स की पूजा-
नया कैदी खबर लेकर आया है दोस्तों!
आदेश आ गया है कि इस दुनिया पर ब्लैक पॉवर्स का राज हो!
CONTROL
इस जेल में पांच हजार कैदी हैं और महानगर में सिर्फ दस हजार सुरक्षाकर्मी हैं!
वहां पर पहले से मौजूद ब्लैक पॉवर्स के एजेंट भी हमारी प्रतीक्षा में हैं!
अब नींद से जाग जा बुचर!
सपना खत्म हो गया है!
अब जेल के ताले खुलते ही महानगर पर हमारी सेना को धावा बोल देना है!
अब सलाखों के अंदर महानगर वाले होंगे और बाहर हम!
क्या बकवास कर रहा है?
उधर देख!
ममी!
अनलॉक कोड को मत दबाना! वर्ना मैं तुम्हारा गला दबा दूंगी!

आज हमारा रास्ता मत रोक, ममी! आज आजादी का दिन है!
तू भी तो हमारी तरह एक कैदी ही है! बीस साल की सजा के सिर्फ सात साल काट पाई है!
क्या तुझे हमारी तरह आजादी नहीं चाहिए?
मुझे महानगर के निर्दोषों की बर्बादी नहीं चाहिए! तुम्हारी आजादी उनकी बर्बादी है!
आदेश आ चुका है! बर्बादी तो होकर ही रहेगी!
और शुरूआत तुझसे होगी!
अनलॉक कोड फीड हुआ-
और अपनी-अपनी सेल के दरवाजे खुलते ही कैदी बाढ़ के पानी की तरह बाहर निकलने लगे-
तूने मेरे ऑफर को ठुकरा दिया था, ममी! लेकिन हम फिर भी तुझे आजादी देंगे!
तुझे तेरी जिन्दगी से आजादी देंगे हम!
इसके बदन के जो हिस्से जिसे चाहिए, वह ले ले!
ममी तो मर चुकी है!

और मरे हुए लोग न दुबारा जिन्दा होते हैं...
...और न ही मरते हैं!
सैकड़ों खूंखार कैदियों से घिरी हुई मम्मी उनका मुकाबला कर रही थी-
काम आसान तो कतई नहीं था-
पर मम्मी को देखकर तो ऐसा ही लग रहा था-
कुछ ही पलों में एक्स्ट्रा फोर्स आ जाएगी! और तब तक मम्मी इन पर भारी पड़ेगी!
कमाल है! कौन है ये लड़की?
तुम नए हो न! इसीलिए मम्मी के बारे में जानते नहीं हो!

" ये पिछले सात सालों से इस जेल में है! पच्चीस हत्याओं के जुर्म में बीस साल की सजा काट रही है। ये इस जेल की सबसे खूंखार कैदी हुआ करती थी! हर समय इस पर दस गार्ड तैनात करने पड़ते थे-"
" लेकिन फिर भी लगभग साल भर पहले ये जेल से भागने में कामयाब हो ही गई। पर किस्मत इसके साथ नहीं थी। रास्ते में एक एक्सीडेंट में ये बुरी तरह से जल गई और इसे वापस आना पड़ा। लेकिन इस हादसे में इसके अंदर का शैतान भी जल गया-"
" ये एकाएक जेल प्रशासन की दोस्त और मददगार बन गई-"
" और तब से हमने भी इसका नाम पॉमी हरिकेन से बदलकर ममी रख दिया-"
" क्योंकि अपराधी इससे ऐसे ही थर-थर कांपते हैं जैसे उन्होंने कोई भूत देख लिया हो-"
" और आज मुझे पता चल रहा है कि ये खूंखार कैदी इससे इतना क्यों डरते हैं-"
सैकड़ों कैदियों पर भारी पड़ने वाली एक लड़की से भला कौन नहीं डरेगा!
शुक्र है कि ये हमारी तरफ है!
लो! फोर्स भी आ गई!

तुम लोग चारों तरफ से घिर चुके हो! अपने-अपने हथियार डाल दो और शान्ति से अपने-अपने सेल में वापस जाओ!
चले जाएंगे! पर सौ-दो सौ स्ट्रेचर तो भेजो!
अह!
आऽऽऽ?
लावे की दरारें जेल तक पहुंच चुकी थी-
अब पापियों को नर्क तक जाने की जरूरत नहीं थी-
आऽऽऽऽऽऽऽ
आऽऽऽ ह!
नर्क खुद उनके दरवाजे तक आ गया था-
दरारें अब महानगर की तरफ बढ़ रही थीं-

महानगर को बचाने का एक ही रास्ता था-
लावे पर लगातार बढ़ रहे वैक्यूम के प्रेशर को रोकना-
पर नागराज के ऐसे हर प्रयास को ब्लैक्यूम का अभेद्य कवच विफल कर रहा था -
लेकिन तभी-
लावे पर बढ़ता दबाव एकाएक कम होने लगा! महानगर की तरफ बढ़ता लावा थम गया-
क्योंकि ज्वालामुखी की दीवार में हुए छेदों ने लावे का रुख मोड़ दिया-
ये किसने किया?
मैंने! महानगर को तो बचाना ही था, नागराज! महानगर ही नहीं रहता तो मैं तुमको और विसर्पी को वापस बुलाने का वादा भला कैसे पूरा करती?
फ्लेमिना! तो वह वादा तुमने किया था! कमाल है! तुम इतनी बड़ी हो गई कि मैं तुमको पहचान ही नहीं पाया!
पर विसर्पी कहां है?

विसर्पी कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर थी-
यह मैं क्या देख रही हूं, ध्रुव?
सामने एक और ध्रुव है! बिल्कुल इसी किस्म के यान में! ये तो ऐसा है जैसे सामने बड़ा सा आईना लगा हो?
एक साथ दो-दो ध्रुव कैसे?
ये क्रूरपाशा है विसर्पी! ये क्रूरपाशा की चाल है, तुम्हारा अपहरण करने की!
ये मेरा रूप लेकर तुमको भ्रमित करना चाहता है!
झूठ! तू क्रूरपाशा है! असली ध्रुव मैं हूं!
उसके यान से कूद जाओ विसर्पी! तुरन्त!
तुम दोनों में से एक तो नकली है! और मुझे मालूम है कि इसका पता कैसे लगाया जा सकता है!
असली ध्रुव को पता है कि मेरे किस तलवे के नीचे सांप का निशान बना है। बताओ, दांए या बांए?
दांया! ओ... याद आया!
शायद बांया!

मूर्ख! मेरे किसी तलवे पर निशान नहीं है!
और ध्रुव को यह पता है!
मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि तू नकली ध्रुव है! क्योंकि ध्रुव के रूप में तूने न तो दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया और न ही नताशा के बारे में सच बोला!
तूने झूठ से झूठ को पकड़ा है विसर्पी! पर क्रूरपाशा जो बोलता है वही सच हो जाता है!
मैं तेरे दोनों तलवों पर सांप का निशान जरूर बनाऊंगा! पर तुझे अपनी बीवी बनाने के बाद!
विसर्पी को छोड़ दे क्रूरपाशा! या इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार हो जा!
अमर क्रूरपाशा को मारने की धमकी दे रहा है तू?
भाग जा, वर्ना नागराज भी तुझे नहीं बचा पाएगा!

बहादुर वार करते हैं! धमकी सिर्फ कायर देते हैं!
तुमसे मुकाबला करने की तो मेरी भी सालों से इच्छा है ध्रुव! सुना है कि तुझसे आज तक कोई योद्धा या महा-योद्धा जीत नहीं पाया है!
पर मेरे पास रुकने का समय नहीं है!
इसलिए आज तू मेरे मोहरे से लड़ ले! तुझे पीटने का शौक मैं फिर कभी पूरा कर लूंगा!
ओह! ये तो वही गुरिल्ला है! यानी ये भी एक ब्लैक पावर था!
अगर तू इससे बच पाया तो!
और इसे रोककर तुमने मुझे ध्रुव होने का सबूत दिया था!
क्रूरपाशा का रास्ता अब साफ था-
न तो ध्रुव उसके पीछे आ सकता था-
और न ही नागराज-
रुको फ्लेमिना...
ओफ्!
इसका 'वैक्यूम शील्ड' का कवच हर शक्ति को रोक सकता है!
आऽऽऽह! समझ गई! फिर हम इसको कैसे रोकेंगे?

अगर ये मुझे पता होता तो मैं इसको अब तक खत्म कर चुका होता!
खत्म तो अब तुम लोग होगे! क्योंकि इस लड़की ने ज्वालामुखी में छेद करके लावे को पूरे जंगल में फैला दिया है!
देखो, पूरा जंगल जल रहा है! और यहां से भागने की कोई जगह नहीं है!
ये सही कह रहा है! इस जंगल के चारों तरफ एक रहस्यमय अवरोध लगा हुआ है! इसीलिए सबसे पहले तो इस आग को बुझाने का इंतजाम करना होगा!
इस जंगल से बाहर कुछ भी नहीं आ सकता! लेकिन अंदर आ सकता है! जैसे बादल फटने से पैदा हुआ पानी!
दिव्यास्त्र का चक्रवात घनघोर बादलों को इकट्ठा करने लगा-
और फिर वे बादल फट पड़े-
और उनमें मौजूद लाखों गैलन पानी एक साथ सुलगते जंगल पर बरस पड़ा-
तूने जंगल को तो बचा लिया नागराज, पर अब तू खुद नहीं बचेगा!
आऽऽऽह! ये हम पर 'वैक्यूम बम' फेंक रहा है! और इनके फटने का असर आम बमों से एकदम अलग है!
आम बम फटने पर बाहर की तरफ दबाव डालता है! पर इस बम का धमाका हमको इसकी तरफ खींच रहा है!

इस बम से बच पाना असंभव है नागराज! क्योंकि ये फटने के साथ-साथ तुम दोनों के फेफड़ों में मौजूद हवा को भी खींच लेगा...
... और तुम दोनों के फेफड़ों को भी!
आऽऽऽह! ना... ग... राज, मे... रा... दम... घुट...
फ्लेमिना!
फ्लेमिना को जलने लायक हवा नहीं मिल पा रही है। ये बम चारों तरफ से हवा को खींच रहा है। मैं इससे दूर जाकर भी इससे बच नहीं सकता!
बचने का रास्ता कहीं नहीं था-
कुछ ही पलों में ये गोले फटकर नागराज की प्राणवायु खींच लेने वाले थे-
67

ध्रुव की स्थिति भी कुछ ज्यादा बेहतर नहीं थी-
ये गुरिल्ला तो यान को क्रूरपाशा की तरफ जाने ही नहीं दे रहा है!
वायु में तना अवरोध मुझे यान को ऊँचाई पर ले जाने से भी रोक रहा है!
पर सबसे बुरी खबर तो ये है...
... कि इसके विशाल शरीर पर देवास्त्र भी खास असर नहीं डाल पा रहे हैं!
ब्लैक पॉवर्स में देवास्त्रों की ऊर्जा झेल सकने की खास क्षमता होती है, ऐसा बाबा गोरखनाथ ने भी बताया था!
पर भागने से काम नहीं चलेगा! किसी महाअस्त्र का प्रयोग तो करना ही पड़ेगा!
आमने- सामने की लड़ाई लड़नी ही पड़ेगी! वर्ना क्रूरपाशा हमारी नाक के नीचे से विसर्पी का हरण करने में सफल हो जाएगा!
बाणास्त्र, एक पल में सैकड़ों धारदार बाणों को उगल सकता था-
पर उचित नतीजा पाने के लिए बाणों का निशाने पर लगना भी जरूरी था-

ध्रुव का निशाना चूक गया था-
क्या सचमुच ध्रुव का निशाना चूक गया था ?
नहीं-
निशाने, निशाने पर ही लगे थे-
कम्बख्त खुद तो धुंआ बन गया, पर साथ-साथ मेरे यान को भी धुंआ बना गया! अब इस जलते जंगल को पार करके विसर्पी तक पहुंचने में मुझे अच्छा-खासा समय लगा!
एक मदद विसर्पी की तरफ बढ़ रही थी-

पर दूसरी मदद अभी भी उससे कोसों दूर थी-
इसको रोकने के लिए मुझे इसको वैक्यूम शील्ड से बाहर निकालना होगा! और अब तक मेरे दिमाग में ऐसी कोई चीज नहीं आई है जो इसकी वैक्यूम शील्ड को तोड़ सके!
लेकिन सिर्फ...
...अब तक!
वैक्यूम शील्ड को सिर्फ एक ही चीज तोड़ सकती है!
खुद वैक्यूम!
अब ये वैक्यूम बम के गोले ही मेरी मदद करेंगे!
पर मुझे जल्दी करनी होगी! क्योंकि इन गोलों के फटने में अब कुछ ही सेकेंड्स का वक्त है!
और अगर ये मेरे इतनी पास फट गए तो...
अब वैक्यूम शील्ड के खिलाफ वैक्यूम की शक्ति के साथ-साथ नागराज की नागशक्ति भी थी-
वैक्यूम शील्ड में दरारें तो पड़नी ही थी-

और वैक्यूम शील्ड को टूटना भी था!
खेल खत्म!
पर खेल अभी खत्म नहीं हुआ था-
गुरुदेव! मैं अभी भी इस अवरोध के पार नहीं जा पा रहा हूं! कुछ करो, गुरुदेव! जल्दी!
चुप रह, चेले! मुझे ध्यान केन्द्रित करने दे!
मैं अपनी यांत्रिक शक्तियों को तरंगों द्वारा स्थानांतरित कर रहा हूं!
पर कहां?
" गादड़यान में-"
" जो शक्ति तेरा रास्ता रोक रही है उससे सिर्फ यांत्रिक शक्ति ही टक्कर ले सकती है-"
" और जितनी टक्करें अवरोध को लगेंगी-"

" उतनी ही चोट उस शख्स को पहुंचेगी जिसने इस अवरोध को खड़ा किया है-"
आऽऽऽह!
आऽऽऽ ह! इस अवरोध को तो मैंने तब लगाया था जब मैंने उस लड़की की आंखों में वह विश्वास देखा था जो नागराज और विसर्पी को वापस महानगर बुला सकता था! ताकि विसर्पी वापस महानगर ना आ सके
इस अवरोध पर तो नागराज ने भी देवशक्तियां आजमाई थीं! पर उससे भी मुझे ऐसी चोट नहीं लगी थी जितनी इस धक्के से लग रही है। आखिर ऐसा शक्तिशाली वार कौन...
गारुड़ यान। और उसमें क्रूरपाशा के साथ विसर्पी भी है! क्रूरपाशा ने विसर्पी का हरण कर लिया है!
वैसे नीति तो कहती है कि मैं अवरोध खोल दूं और क्रूरपाशा को विसर्पी का हरण कर लेने दूं!
ये अवरोध नहीं खुलेगा!
दादाजी, आप चिल्लाए क्यों...
पर अपने स्वार्थ के लिए मैं विसर्पी का इतना ज्यादा अहित नहीं कर सकता! कुछ भी हो जाए...
ओ गॉड! ओ गॉड!

ये तो कानन वन है। वहीं जहां पर नागराज और विसर्पी गए हैं! और इसके चारों तरफ बाधाबंद तिलिस्म लगा है!
मुझे ये तो पता था कि आप विसर्पी से नाराज हैं!... पर उसको रोकने के लिए आप तिलिस्म का प्रयोग भी कर सकते हैं, यह मैंने नहीं सोचा था!
ये तिलिस्म तुरन्त हटा लीजिए दादाजी!
मैं मानता हूं कि मैंने तुम्हारी नादानियों को सुधारने के लिए ऐसा किया था! पर अब परिस्थितियां एकाएक बदल गई हैं, भारती! शायद तुमको पता नहीं है कि...
आप तिलिस्म हटाएंगे या नहीं?
नहीं!
तो फिर ये तिलिस्म मैं खुद हटाऊंगी!
ऐसा मैं तुमको करने नहीं दूंगा!
तो फिर आपको मेरे रास्ते से हटना होगा!
भारती खुद एक माहिर तिलिस्म ज्ञाता थी-
पर अभी उसका तिलिस्म ज्ञान वेदाचार्य से बहुत कम था-
लेकिन-

किस्मत उसके साथ थी-
और विसर्पी के साथ थी-
बद्किस्मती-
बाधाबंध अवरोध हट गया। और-
हा हा हा!
हरण सफल हो गया!
WAIT TILL NEXT......... TK. CR. :-)
by
FRANK
महागाथा जारी है- शरण काण्ड में।
HIMzzI